



story
weaver

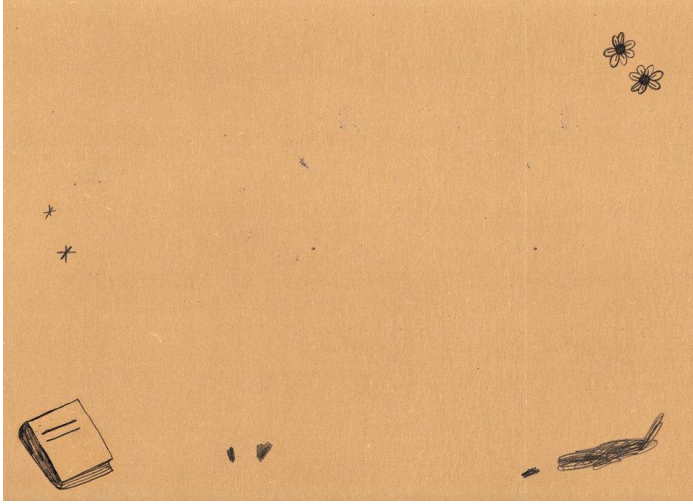
पठन स्तर ४

थोड़ी सी मदद

Author: Payal Dhar

Illustrator: Vartika Sharma

Translator: Madhubala Joshi



प्रयि... जो भी हो, तुम जानती ही हो कितुम कौन हो। और यूँ भी तुम यह पत्र
कभी नहीं देख पाओगी।

मैडम ने कहा था कि मुझे तुम्हारी मदद करनी है और तुम्हें यह दखाना है कि स्कूल
में कौन सी जगह कहाँ है, क्योंकि तुम स्कूल में नई आई हो। लेकिन उन्होंने मुझे
इस बारे में और कुछ नहीं बताया था।

स्कूल से घर लौटते हुए अली, गौरव, सुमी और रानी, मुझसे बार-बार मेरी इस नई
जम्मेदारी के बारे में पूछते रहे। मैंने बात टालने की कोशिश की, लेकिन मुझे तो
मालूम था कि मुझे क्या काम सौंपा गया है। मैंने उनसे कहा कि पिता नहीं तुम लोग
कसि चीज़ के बारे में बात कर रहे हो। लेकिन यह बात सच नहीं थी। मुझे अच्छी
तरह पता था कि वे कसि के बारे में पूछ रहे हैं?

देखो न, तुम्हारी वजह से मुझे अपने दोस्तों से झूठ बोलना पड़ा!

तुम्हारा,

मै





कहो कैसी हो,

माँ कहती है कलिंगों को घूरना अच्छी बात नहीं है। लेकिन मैं तो देखता हूँ किसिभी तुम्हें घूरते हैं। वे मुझे भी घूरते हैं क्योंकि मुझे तुम्हारे साथ रहना होता है, तुम्हारा ध्यान रखने के लिए। तुम हमारे स्कूल में क्यों आइं ? तुमने अपनी पढ़ाई उसी स्कूल में जारी क्यों नहीं रखी जहाँ तुम पहले पढ़ती थीं?

जानती हो कल क्या हुआ? गौरव, अली और सातवीं कक्षा के उनके दो और दोस्त स्कूल की छुट्टी के बाद मेरे पीछे पड़ गए। तुम समझ ही गई होगी कविह क्या जानना चाहते होंगे! उन्होंने मेरा बस्ता छीन लिया और वापस नहीं दे रहे थे। बाद में उन्होंने उसे सड़क किनारे झाड़ियों में फेंक दिया। उसे लाने के लिए मुझे घसितते हुए ढलान पर जाना पड़ा। मेरी कमीज़ फट गई और माँ ने मुझे डाँटा।

यह सब तुम्हारी ही वजह से हुआ।

मैं



हैलो,

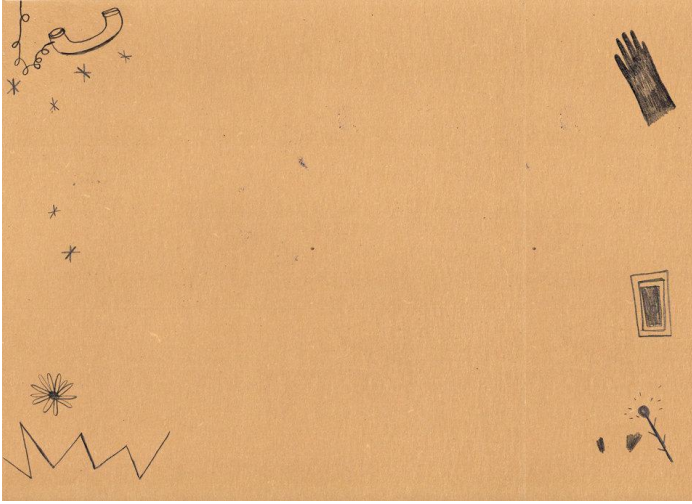
मैं सबसे कहता हूँ कवि जो कुछ भी जानना चाहते हैं खुद तुमसे ही पूछ लें। मुझसे पूछने का क्या मतलब? मुझे कैसे पता हो सकता है कितुम्हारे पास वह चीज क्यों है और वह कैसे काम करती है?

सच कहूँ तो खुद मैं भी यह बात जानना चाहता हूँ और मेरे मन में भी वही सवाल है जो लोग तुम्हारे बारे में मुझसे पूछते हैं। हाँ, मैंने पहले दनि ही, जब तुम कक्षा में आई थी, गौर कथिा था कितुम एक ही हाथ से सारे काम करती हो और तुम्हारा बायाँ हाथ कभी हलिता भी नहीं। पहले-पहल मुझे समझ में नहीं आया कइसकी वजह क्या है। फरि, जब मैं और नजदीक आया, तब देखा ककिुछ है जो ठीक सा नहीं है। वह अजीब लग रहा था, जैसे तुम्हारे हाथ पर प्लास्टिक की परत चढ़ी हो। मैं समझा कयिह कसिी कसि्म का खलौना हाथ होगा। मुझे बात समझने में कुछ समय लगा। इसके अलावा, खाने की छुट्टी के दौरान जो हुआ वह मुझसे छुपा नहीं

था।

फरि मलिंगे।

मै



हेलो,

आज मेरी बड़ी दीदी का फोन आया। वह दलिली में इँजीनयिरगि की पढाई कर रही हैं। मैंने उन्हें बताया कि हिमारी कक्षा में एक लड़की है और उसका एक हाथ नकली है।

। दीदी ने बताया कि उसे 'प्रॉस्थेटिक हैड' कहते हैं।

सुनो, मैं तुम्हें एक सलाह देना चाहता हूँ। यह ठीक है कि तुम हमारे स्कूल में नई हो।

लेकिन अगर तुम चाहती हो कि कोई तुम्हें घूर-घूर कर न देखे, और तुम्हारे बारे में बातें न करे, तो तुम्हें भी हर समय सबसे अलग-थलग खड़े रहना बंद करना होगा।

तुम हमारे साथ खेलती क्यों नहीं? तुम झूला झूलने क्यों नहीं आती? झूला झूलना तो सब को अच्छा लगता है। तुम्हें स्कूल में दो हफ्ते हो चुके हैं, अब तो तुम खुद

भी आ सकती हो। मैं हमेशा तो तुम्हारा ध्यान नहीं रख सकता न।

कभी-कभी, मेरी समझ में नहीं आता कि तुम्हें कैसे समझाऊँ।

मैं





हेलो जी!

उस दनि खाने की छुट्टी के दौरान जो कुछ हुआ, मैं देख रहा था। आखरि मैं भी सब कुछ जानना चाहता हूँ। क्या किसी का एक ही हाथ होना कोई अजीब बात है? सरिफ़ तुम्हारा हाथ ही ऐसा है या फरि तुम्हारी पूरी बाँह ही नकली. . . माफ़ करना, प्रॉस्थेटिकि है?

आज जब सुमी, गौरव और मैं स्कूल आ रहे थे तो वे एक खेल खेल रहे थे, जो उन्होंने ही बनाया था। इस खेल को वे एक हाथ की चुनौती कह रहे थे। इस का नियम यह था कि तुम्हें एक हाथ से ही सब काम करने हैं- जैसेकि अपना बस्ता समेटना या फरि अपनी कमीज़ के बटन लगाना।

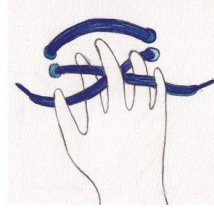


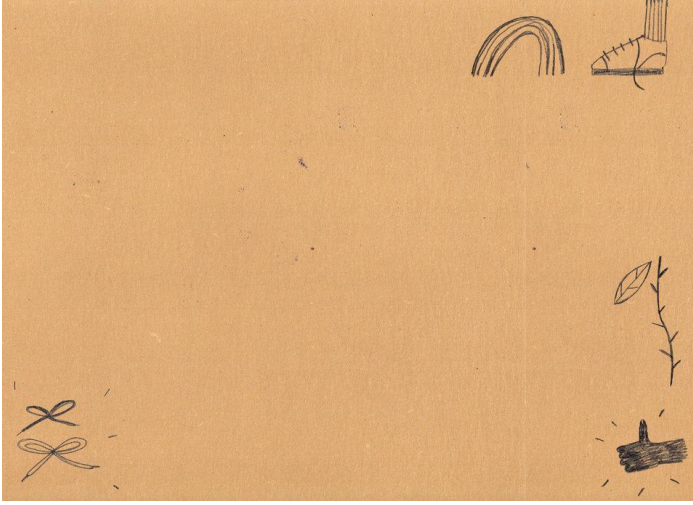
सुमी अपने जूते के फीते नहीं बाँध सकी। और खेलने के बाद भी उसे जूते के फीते बाँधने का ध्यान नहीं रहा, और वह उलझ कर गरि पड़ी। उसकी ठोड़ी में चोट लग गई। जब मैडम ने उसकी ठोड़ी की चोट देखी तो उस पर ऐंटीसेप्टिक क्रीम तो लगा दी, लेकिन उसे लापरवाही बरतने के लिए डाँट भी पड़ी। “जूतों के फीते बाँधे बना पहाड़ों में दौड़ लगाई जाती है? घर जाते समय गरि पड़ती या और कुछ हो जाता तो क्या होता?”

मुझे लगता है कबिड़े लोग कुछ ज़्यादा ही चिंता करते हैं।

सचमुच तुम्हारा,

मैं





हाय,

तुम जानती हो न कि सँयोग क्या होता है? यह ऐसी बात है कि जैसे तुम कुछ कहो और थोड़ी देर में वही बात कुछ अलग तरीके से सच हो जाए। पछिले पत्र में मैंने तुम्हें सुमी और जूतों के फीतों के बारे में बताया था। और उसके बाद, आज, मैंने तुम्हें जूतों के फीते बाँधते हुए देखा। वाह, यह अद्भुत था! मैं सोचता हूँ कि तुमने यह काम मुझसे ज़्यादा जल्दी किया जबकि मैं दोनों हाथों से काम करता हूँ। अगर तुम मेरी दोस्त न होती तो मैं तुम्हारे साथ जूते के फीते बाँधने की रेस लगाता। नहीं, नहीं, शायद मैं तुम्हें कहता कि मुझे भी एक हाथ से फीते बाँधना सिखाओ। सच बताऊँ? घर जाकर मैंने एक हाथ से जूते के फीते बाँधने की कोशिश की थी। लेकिन मेरे लिए यह कर पाना असम्भव है। तुम ऐसा कैसे कर पाती हो? शायद मैं यह बात कल तुमसे पूछूँ।

जानने को बेचैन,

मैं



हेलो,

तुम्हारी बात सुनने के बाद, मैंने एक हाथ से बहुत सी चीजें करने की कोशिश की।

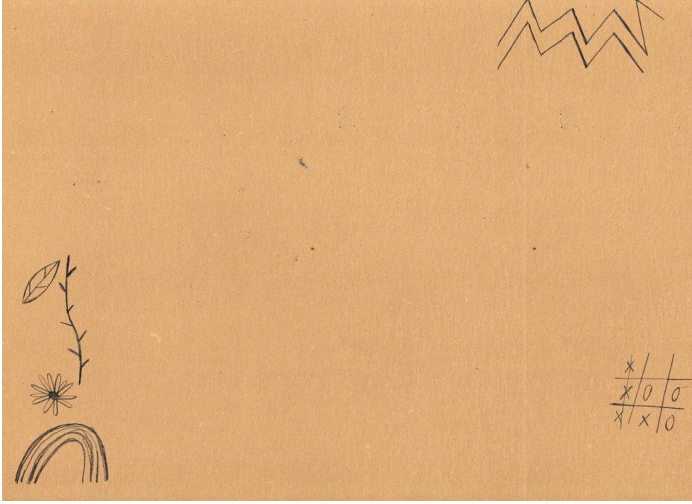
लेकिन यह बहुत ही मुश्किल है! मुझे अभी तक यह समझ नहीं आया कि तुम नहाना, कपड़े पहनना, बैग संभालना जैसे काम खुद ही कैसे कर लेती हो। उस दिन खाने की छुट्टी के बाद की बातचीत के बाद से मैंने महसूस किया कि तुम भले ही कुछ कामों को थोड़ा अलग ढंग से करती हो, लेकिन तुम भी वह सारे काम कर लेती हो जो बाकी सब लोग करते हैं।

सुनो, हमारे साथ खेलने के बारे में मैंने पहले जो कुछ भी कहा है उसके लिए मैं क्षमा माँगता हूँ। मुझे लगता है कि तुम सरिफ़ शर्माती हो। और मैंने एक ही हाथ का इस्तेमाल करते हुए झूला झूलने की भी कोशिश की। और यह काम बहुत ही मुश्किल है, झूले को दोनों हाथों से पकड़ कर न रखा जाए तो शरीर का संतुलन नहीं

बन पाता। लेकिन तुम जैसे जँगल जमि की उस्ताद हो। भले ही तुम बार पर लटक
नहीं पाती लेकिन तुम सचमुच बहुत तेज दौड़ती हो, अली से भी तेज, जसिं खेल
दविस पर पहला इनाम मलिा था।

अलवदिा,

मै



हेलो!

फ़िल्म सच में बहुत ही बढ़िया थी, है न? मैं इतना हँसा कि मेरा पेट दुखने लगा और मेरे आँसू निकल आए। जब भी स्कूल में फ़िल्म दिखाई जाती है मुझे बहुत अच्छा लगता है। क्योंकि उस दिन पढ़ाई की छुट्टी।

पछिली बार, हमारे स्कूल में तुम्हारे आने से पहले, हमें एक बाघ के बच्चे की फ़िल्म दिखाई गयी थी जो जंगल में भटक गया था। हम भी उसे लेकर चिंता में पड़ गए थे क्योंकि वह एक सच्ची कहानी थी। बाद में वह बाघ का बच्चा किसी को मिला जाता है और वह उसे उसके परिवार से मिला देता है। जानती हो ऐसी सच्ची कहानियों को डॉक्यूमेंट्री कहा जाता है। बाघ के बच्चे बड़े प्यारे होते हैं, हैं न? पछिले बरस, हमारे घर के पास एक पल्लू रहता था। वह भी बहुत प्यारा था, लेकिन फिर वह बड़ा हो गया और पहले जैसा प्यारा नहीं रह गया।

अच्छा, अब चलता हूँ!

मैं





हेलो, हेलो!

पता है जब मैंने तुम्हें बस में देखा तो मैं बहुत हैरान हुआ था। मुझे इस बात का अंदाज़ा नहीं था कि मेरे पति और तुम्हारे पति एक ही जगह काम करते हैं! लेकिन मैं बहुत खुश हूँ कि तुम दफ्तर की पकिनकि में आई, क्योंकि पिछले साल जब हम दफ्तर की पकिनकि पर गए थे तब उसमें मेरी उम्र का कोई भी बच्चा नहीं था और बड़ों के बीच अकेले-अकेले मुझे ज़रा भी अच्छा नहीं लगा था। मैं बहुत ऊब गया था।

अच्छा भई, मैं बहुत थक गया हूँ और सोने जा रहा हूँ। कल स्कूल में मल्लिगे।

मैं



हाय,

मुझे लगता है कि मुझे यह बात पहले ही तुम्हें बता देनी चाहिए थी- जब भी वार्षिकोत्सव आने वाला होता है, प्रसिपिल साहब कुछ सनक से जाते हैं। वे तुम पर चलि़ला सकते हैं - वे किसी को भी फटकार सकते हैं। अगर ऐसा हो, तो बुरा न मानना। मेरी माँ कहती है कि वे बहुत ज़्यादा तनाव में आ जाते हैं, क्योंकि वार्षिकोत्सव कैसा रहा इससे पता चलता है कि उन्होंने काम कैसा किया है। पता नहीं इसका क्या मतलब है, लेकिन वे बहुत परेशान दखिते हैं। तुमने उनके बाल देखे हैं? वह ऐसे लगते हैं जैसे उन्होंने बजिली का नँगा तार छू लिया हो और उन्हें करारा झटका लगा हो! वैसे, मुझे लगता है कि रानी ने उनकी कुरसी पर मेंढक रख कर अच्छा नहीं किया।

अच्छा, इससे पहले कि प्रसिपिल सर मुझे यह पत्र लिखते हुए पकड़ें, मैं लिखना बंद करूँ!

मैं



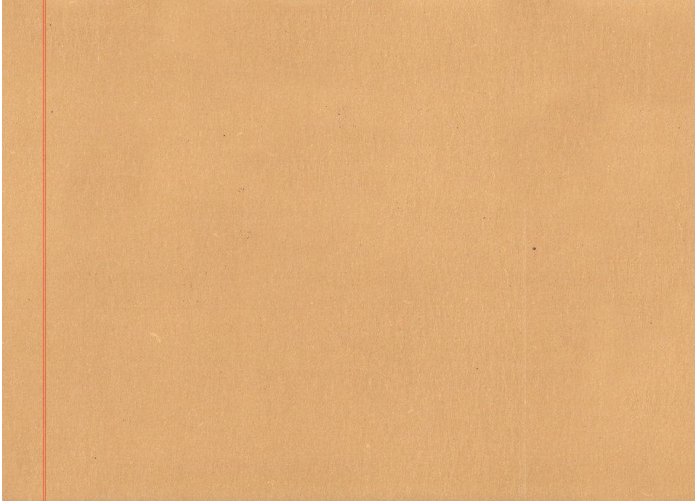


अरे!

तुम्हारा नया हाथ तो बहुत ही बढ़िया है! बुरा न मानना, लेकिन पुराना वाला हाथ कुछ उबाऊ था। बस था... नाम को। जबकनिया वाला तो बिल्कुल जादू जैसा है, और तुम उँगलियाँ भी चला सकती हो और उनसे चीजें भी पकड़ सकती हो! मुझे उम्मीद है कि अगर मैं तुमसे हाथ मिलाने के लिए कहूँ तो तुम बुरा नहीं मानोगी। अरे यह बात बस मेरे मुँह से यूँ ही निकल गई। कल देखेंगे कि क्या तुम इस से कुछ सामान भी उठा सकती हो।

ओह! मुझे अभी अहसास हुआ है कि मैंने तुम्हें जो दो आखीरी पत्र लिखे हैं, उनमें मैंने तुम्हारे प्रॉस्थेटिक हाथ के बारे में बात ही नहीं की। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि मैं इसके बारे में बिल्कुल ही भूल गया था और मेरे पास तुम्हें बताने के लिए और भी बातें थीं। मजेदार बात यह है कि तुम्हारे हाथ को लेकर अब मेरे मन में कोई सवाल नहीं उठते। न जाने क्यों!

तुम्हारा दोस्त



दोस्ती का दर्पण

यह प्रश्नोत्तरी हल करके पता लगाएँ कनिए लोगों के बीच जगह बनाने की कोशिश कर रहे लोगों की मदद करने में आप कतिने कारगर साबति हो सकते हैं!

1. आपकी अध्यापिका ने कक्षा में नए आए साथी को पूरा स्कूल दिखाने को कहा

है। आप क्या सोचेंगे ?

अ. मज़ा आ गया! एक और दोस्त!

ब. नए बच्चे स्कूल में खुद क्यों नहीं घूम लेते

स. ओफ़्रोओह - - -

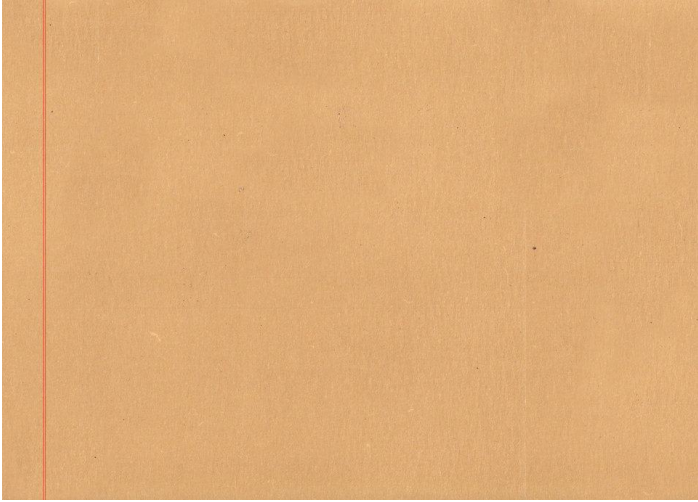
2. आपकी कक्षा की एक लड़की लँगड़ाते हुए चलती है। बाकी बच्चे उस पर हँसते

हैं। आप क्या करेंगे ?

अ. कुछ नहीं। इस से आपको कोई लेना-देना नहीं।

ब. उससे कहेंगे किउनकी परवाह न करे। वह बदतमीज़ है।

स. सहपाठियों से कहेंगे किउसके जैसे होने की कल्पना करे।



3. आपके नए सहपाठी को पहले पढ़ाए गये पाठ समझने में दक्कित हो रही है।

आप क्या करेंगे?

अ. कक्षा की सबसे होशियार छात्रा से कहेंगे कविह अपने नोट्स उसे पढ़ने के लिए दे दे।

ब. अध्यापिका से कहेंगे कि उसकी मदद करना उनका काम है।

स. उससे पूछेंगे कि क्या उसे आपकी मदद चाहिए।

4. आपकी कक्षा की नई छात्रा जरा शर्मीली है। वह किसी के साथ नहीं खेलती।

आप क्या करेंगे?

अ. उससे कुछ नहीं कहेंगे। जब उसकी झंझिक मटि जाएगी तब खेलने लगेगी।

ब. उसे बुला कर खेल में शामिल होने को कहेंगे।

स. उस के पास जा बैठेंगे। शायद वह बातें करने लगे।



अपने अँक गनि :

अ ब स

पूश्न 1.	1	2	3
पूश्न 2.	2	1	3
पूश्न 3.	3	2	1
पूश्न 4.	2	1	3

अब देखे कआप ने कतिने अँक पाए और इसका क्या मतलब है ...



4 से 6 अँक :

आप दोस्ती करने के लिए ही बने हैं। सदा दूसरों की मदद को तैयार! आप इस बात का इन्तज़ार नहीं करते कलोग मदद माँगे। लोगों के मदद माँगने से पहले ही आप मदद देने के लिए हाज़रि रहते हैं।

7 से 9 अँक :

आप स्वतन्त्र कस्मि के व्यक्ती हैं और मानते हैं कसिभी को ऐसा ही होना चाहिए । लेकिन इसका यह मतलब बलिकुल नहीं है कआप को कसी की चन्ता नहीं होती । बस आप दूसरों पर दबाव नहीं बनाना चाहते।

10 से 12 अँक :

आप ज़रा शर्मीले लेकिन दयालु हैं। आप दूसरों की मदद करने और उन्हें सहज अनुभव करवाने के लिए जो भी कर सकते हैं ज़रूर करेंगे। लेकिन बनिा कसी तरह का दखावा कए।



This book was made possible by Pratham Books' StoryWeaver platform. Content under Creative Commons licenses can be downloaded, translated and can even be used to create new stories - provided you give appropriate credit, and indicate if changes were made. To know more about this, and the full terms of use and attribution, please visit the following [link](#) .

Story Attribution:

This story: थोड़ी सी मदद is translated by [Madhubala Joshi](#) . The © for this translation lies with Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Based on Original story: ' [A Helping Hand](#) ' , by [Payal Dhar](#) . © Pratham Books , 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Other Credits:

This book was first published on StoryWeaver, Pratham Books. The development of this book has been supported by Oracle Giving Initiative. This book was created for StoryWeaver, Pratham Books, with the support of Vidya Mani (Guest Editor) and Kaveri Gopalakrishnan (Art Director).

Illustration Attributions:

Cover page: [Friends running in the forest, by the hills](#) , by [Vartika Sharma](#) © Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 2: [Journal 1](#) , by [Vartika Sharma](#) © Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 3: [A group of children watching two figures at a distance](#) , by [Vartika Sharma](#) © Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 4: [Journal 12](#) , by [Vartika Sharma](#) © Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 5: [Journal 3](#) , by [Vartika Sharma](#) © Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 6: [Journal 4](#) , by [Vartika Sharma](#) © Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 7: [Children on a swing](#) , by [Vartika Sharma](#) © Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 8: [Journal 13](#) , by [Vartika Sharma](#) © Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 9: [Journal 14](#) , by [Vartika Sharma](#) © Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 10: [One-hand challenge, doing things with just one hand](#) , by [Vartika Sharma](#) © Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Disclaimer: https://www.storyweaver.org.in/terms_and_conditions



Some rights reserved. This book is CC--BY--4.0 licensed. You can copy, modify, distribute and perform the work, even for commercial purposes, all without asking permission. For full terms of use and attribution, <http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/>

The development of this book has been supported by Oracle Giving Initiative.

This book was made possible by Pratham Books' StoryWeaver platform. Content under Creative Commons licenses can be downloaded, translated and can even be used to create new stories - provided you give appropriate credit, and indicate if changes were made. To know more about this, and the full terms of use and attribution, please visit the following [link](#) .

Illustration Attributions:

Page 11: [Journal 6](#) , by [Vartika Sharma](#) © Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 12: [Journal 7](#) , by [Vartika Sharma](#) © Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 13: [Journal 8](#) , by [Vartika Sharma](#) © Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 14: [Children watching a movie](#) , by [Vartika Sharma](#) © Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 15: [Journal 9](#) , by [Vartika Sharma](#) © Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 16: [Journal 10](#) , by [Vartika Sharma](#) © Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 17: [Man](#)

[jumping, frog on a chair](#) , by [Vartika Sharma](#) © Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 18: [Journal 11](#) , by [Vartika Sharma](#) © Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 19: [Notebook paper](#) , by [Vartika Sharma](#) © Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 20: [Notebook paper](#) , by [Vartika Sharma](#) © Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 21: [Journal 7](#) , by [Vartika Sharma](#) © Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 22: [Journal 11](#) , by [Vartika Sharma](#) © Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Disclaimer: https://www.storyweaver.org.in/terms_and_conditions



Some rights reserved. This book is CC--BY--4.0 licensed. You can copy, modify, distribute and perform the work, even for commercial purposes, all without asking permission. For full terms of use and attribution, <http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/>

The development of this book has been supported by Oracle
Giving Initiative.

थोड़ी सी मदद (Hindi)

हमारी क्लास में एक नयी लड़की आई है, और टीचर ने मुझसे कहा है कि मैं उसके साथ दोस्ती करूँ और स्कूल को जानने-समझने में उसकी मदद करूँ। लेकिन ऐसा करने का मेरा मन नहीं करता - वह... वह हम सब जैसी नहीं है न! पेश है, छोटी-छोटी चिट्ठियों के ज़रिए कही गई दोस्ती और माहौल में घुलने-मलने की एक दलचस्प कहानी!

यह पठन सूत्र ४ की किताब है, उन बच्चों के लिए जो पढ़ने में प्रवीण हैं।



Pratham Books goes digital to weave a whole new chapter in the realm of multilingual children's stories. Knitting together children, authors, illustrators and publishers. Folding in teachers, and translators. To create a rich fabric of openly licensed multilingual stories for the children of India -- and the world. Our unique online platform, StoryWeaver, is a playground where children, parents, teachers and librarians can get creative. Come, start weaving today, and help us get a book in every child's hand!